मगध के उत्कर्ष का कारण अथवा अन्य महाजनपदों पर मगध के वर्चस्व का कारण

यद्यपि क्षेत्रीय राज्य के रूप में मगध की उत्पत्ति पश्चिम के अन्य महाजनपदों की तुलना में देर से हुई।

लौह तकनीकि का प्रयोग पश्चिमी महाजनपदों में पहले हुआ।

पाटलीपुत्र (मगध) के समान अन्य जनपद भी गंगा व अन्य सहायक नदियों की घाटी में बसे थे। अगर विशिष्ट भौगोलिक स्थिति मगध के लिये महत्वपूर्ण समझी गई, तो अवन्ति (उज्जैनी) भी लौह उद्गम स्थलों से दूर नहीं था। प्रश्न उठता है कि देर से राजनैतिक व क्षेत्रीय निर्माण की प्रक्रिया शुरू होने के बावजूद भी मगध अन्य महाजनपदों पर अपना वर्चस्व किस प्रकार स्थापित कर लेता है।

जहाँ तक व्यक्तिगत योगदान अथवा महत्वाकांक्षा का प्रश्न है. आधुनिक इतिहासकार इस तथ्य को प्राथमिक कारक के रूप में महत्वपूर्ण नहीं मानते क्योंकि जिस महाजनपदों की सर्वोच्चता स्थापित होती वहाँ पर इन प्रतापी राजाओं की उपस्थिति होती। स्पष्ट है, कि मगध के उत्कर्ष को वैदिकोत्तर काल (600 B.C.) में परिवर्तन के उन कारकों के परिणाम के रूप में देखना चाहिये. जिसके कारण ताम्रपाषाणीय एवं नवपाषाणीय स्थानीय संस्कृतियाँ, उत्तरी काली चमकिले पालिशदार मृदभाण्ड संस्कृति के रूप में परिवर्तित हो रही थी।

भौतिक संस्कृति में होनेवाले परिवर्तनों को भी मगध के उत्कर्ष के

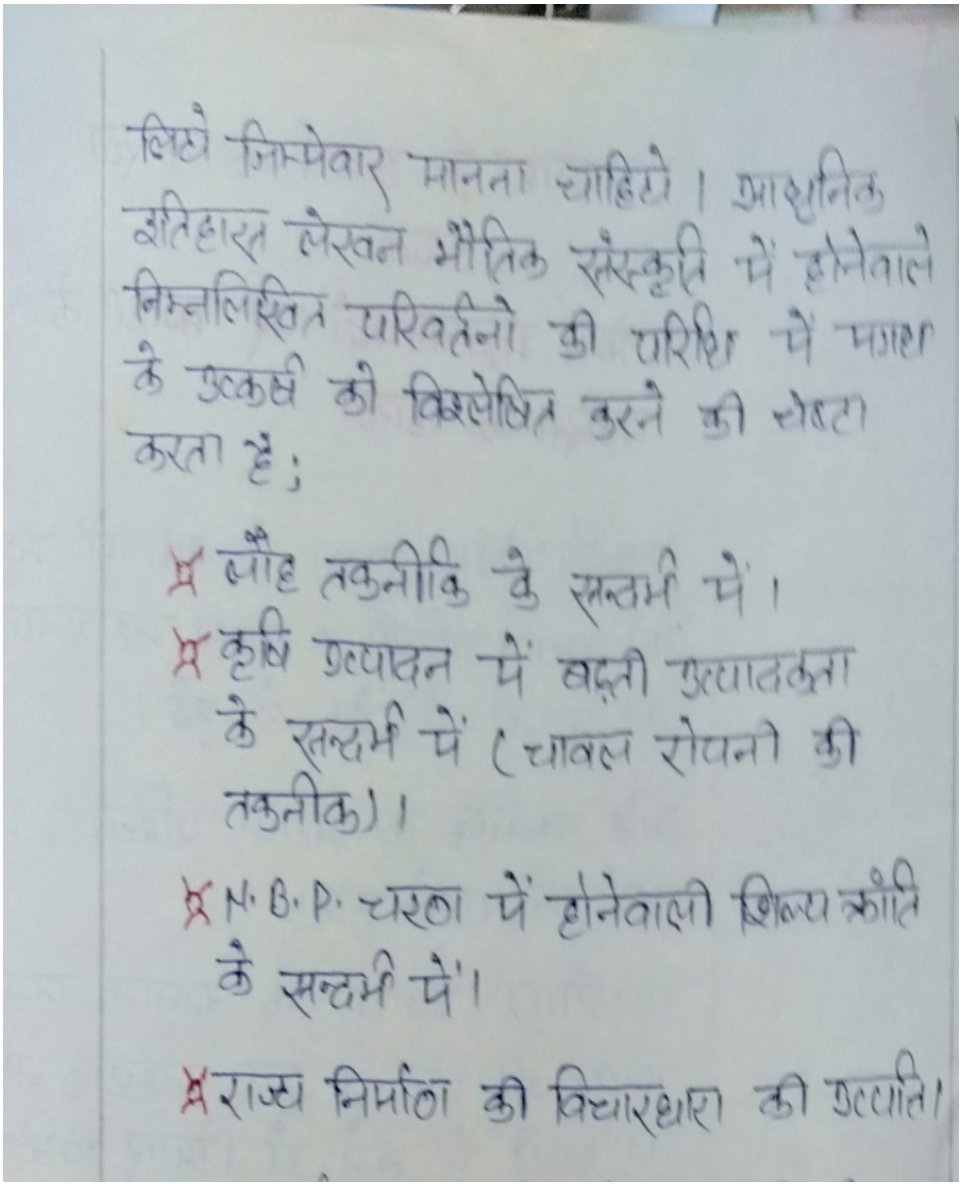

लिये जिम्मेवार मानना चाहिये। आधुनिक इतिहास लेखन भौतिक संस्कृति में होनेवाले निम्नलिखित परिवर्तनों की परिधि में समाज के उत्कर्ष को विश्लेषित करने की चेष्टा करता है;

- लौह तकनीकि के सन्दर्भ में।
- कृषि उत्पादन में बढ़ती उत्पादकता के सन्दर्भ में (चावल रोपनी की तकनीक)।
- N.B.P. चरण में होनेवाली शिल्प क्रांति के सन्दर्भ में।
- राज्य निर्माण की विचारधारा की उत्पत्ति।

जारी.....